महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

कक्षा- एम.ए./एम.फिल./पीएच्.डी.

विषय- काव्यप्रकाशः

उपविषय- काव्य-दोषाः

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

काव्य-दोषाः

- उपक्रम

सत्काव्य के लिए दोषों का न होना नितान्त आवश्यक है। यदि उत्तम काव्य के लिए गुणों का होना आवश्यक है, तो वहाँ दोषाभाव का होना भी आवश्यक है। आचार्य भरत गुण को दोष का विपर्यस्त मानते हैं –

"विपर्यस्ता गुणाः काव्येषु कीर्तिताः" (ना.शा.-17/95)।

भरत की यह मान्यता चिरकाल तक मान्य रही, परिणामस्वरूप दण्डी ने दोष का लक्षण न लिख दोषों के अभाव को गुण माना है-

"महान् निर्दोषिता गुणाः।"

समस्त प्राचीन आचार्य प्रायः दोषों के अभाव को उत्तम काव्य के लिए आवश्यक मानते हैं। इसीलिए भामह काव्य में एक भी दोषयुक्त शब्द का समावेश स्वीकार नहीं करते हैं।

दोषपूर्ण काव्य कुपुत्र की भाँति निन्दा का पात्र होता है। कविता नहीं लिखना न तो अधम है और न व्याधिकारक एवं न दण्डदायक, किन्तु बुरा काव्य या सदोष काव्य की रचना तो साक्षात् मृत्यु ही है"—

सर्वथा पदमप्येकं न निगाद्यमवद्यवत्।

विलक्ष्मणा हि काव्येन दुःसुतेनेव निन्द्यते॥

नाकवित्त्वमधर्माय व्याधये दण्डनाय या।

कुकवित्वं पुनः साक्षान्मृतिमाहुर्मनीषिणः॥

(काव्यालंकार 1/11-12)

काव्य-दोष के सन्दर्भ में विभिन्न आचार्यों के मत

1.

दण्डी

दण्डी को काव्य में दोषों की उपेक्षा किञ्चित भी सह्य नहीं है, क्योंकि वे काव्य की विफलता के कारण होते हैं। उदाहरण द्वारा इस बात का स्पष्टीकरण करते हुए वे लिखते हैं कि जैसे कुष्ठ का एक धब्बा सुन्दर शरीर को कुरुप बना देता है वैसे ही दोष काव्य को असुन्दर बना देते हैं, अतः दोषों से बचना चाहिए—

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथंचन।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम्।
इति दोषा . . . वर्ज्याः काव्येषु सूरिभिः॥
(काव्यादर्श 1/7)

दण्डी के अनुसार कवि-कौशल एवं चमत्कार के द्वारा दोष सीमा का उल्लंघन कर गुण भी बन जाते हैं—

उत्क्रम्य दोषगणना गुणवीथी विगाहते। (काव्यादर्श 3/179)

2. **अग्निपुराण**

अग्निपुराणकार के अनुसार दोष उद्वेगजनक होते हैं –

"उद्वेगजनको दोषः।"

3. **वामन**

वामन के अनुसार दोष गुण के विपर्यय होते हैं तथा दोष काव्य-सौन्दर्य को हानि करते है-

गुणविपर्ययात्मानो दोषाः।"

4.

महिमभट्ट

महिमभट्ट काव्य में दोष की स्थिति अनुचित मानते हैं—

"शब्द दोषाणामनौचित्योपगमात्।"

5.

नमिसाधु

काव्यालंकार के टीकाकार नमिसाधु भी दोषों को अनुचित मानते हैं –

"सकलालंकारयुक्तमपि हि काव्यमेकेनापि दोषण दुष्येत, अलंकृतवधूवदनं काणेनेव।"

काव्य-सौन्दर्य के विघातक तत्त्व दोषों को काव्य से दूर ही रखना चाहिए, इसीलिए संस्कृत साहित्य में काव्यलक्षणों में 'अदोषौ' या 'दोषाभाव' को नितान्त आवश्यक बतलाया गया है।

6 जयदेवः - "निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा।"

7 हेमचन्द्रः - "अदोषौ सगुणौ सालंकारी च शब्दाथौं काव्यम्।"

8 भोजराजः - "निर्दोषं गुणवत् काव्यमलंकारैरलंकृतम्।"

भोजराज दोषों को त्याज्य मानते हैं—

हेया इत्यनेन सामान्य लक्षणम्।
ये हेया ते दोषाः इत्यभिप्रायात्॥

9 मम्मटः - "तददोषौ शब्दाथौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।"

आचार्य मम्मट के दोष-विवेचन पर आनन्दवर्धनाचार्य का प्रभाव परिलक्षित होता है। आनन्दवर्धन दोष दो प्रकार के मानते हैं-

एक नित्य दोष, जो रसापकर्ष के हेतु होते हैं।

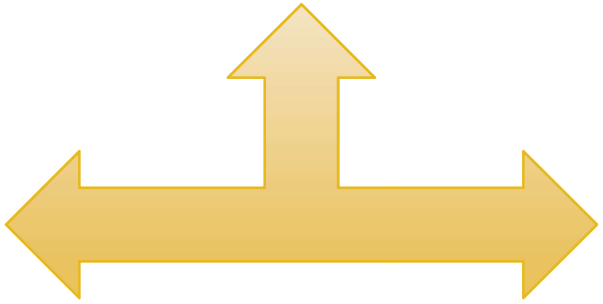

दूसरे वे जो अनित्य होते हैं, श्रुति-दुष्ट आदि - श्रुतिदुष्टादयो दोषा अनित्या ये च दर्शिताः।

मम्मट मुख्य अर्थ के अपकर्षक तत्त्व को दोष कहते हैं और काव्य में मुख्य अर्थ रस ही है—

मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद्वाच्यः।
उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः॥

(का.प्र.-7/49).

अर्थात् मुख्यार्थ का अपकर्ष जिससे होता है, उसको दोष कहते हैं और रस मुख्य (अर्थ) है। उसका आश्रय होने से वाच्य अर्थ भी मुख्यार्थ कहा जाता है। शब्दादि (रस तथा वाच्यार्य) इन दोनों के (बोधन में) उपकारक (सहायक) होते हैं इसलिए उनमें वह दोष रहता है। अर्थात् नीरस काव्य में भी दोष हो सकता है।

रस का विघात तीन प्रकार से होता है

1. रस की प्रतीति में विलम्ब
2. काव्य के आस्वाद में अवरोध होने पर
3. रस - प्रतीति में पूर्ण विघात होने पर

मम्मट के अनुसार दोष

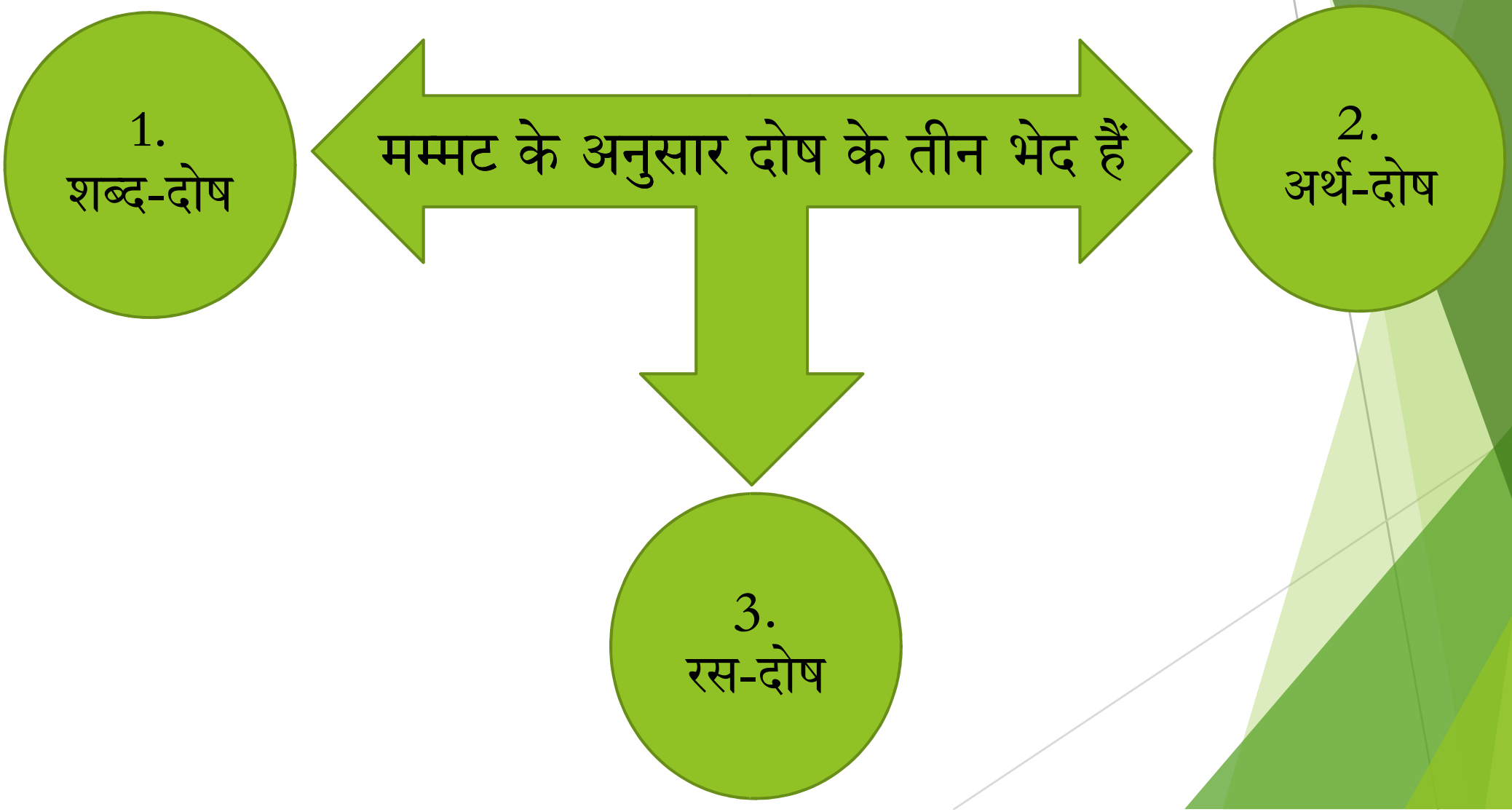

शब्द-दोष के तीन विभाग हैं

1. पद-दोष
2. पदांश-दोष
3. वाक्य-दोष

काव्य के दोष पाँच प्रकार के होते हैं

काव्य का प्रधान तत्त्व रस है, अतः रस-दोष काव्य के मुख्य दोष हैं। रस की प्रतीति अर्थ के द्वारा होती है, अर्थ का ज्ञान शब्दाश्रित है अतः शब्द-दोष और अर्थ-दोषों का स्थान रस-दोष के बाद है। शब्द भी पद और वाक्य के रूप में उपस्थित होकर अर्थ का उपकारक होता है। पद के किसी भी अंश में दोष सम्भव है। ऐसे दोषों का नाम पदांश दोष है, इस प्रकार काव्य के दोष पाँच प्रकार के होते हैं

1. पद-दोष
2. पदांश-दोष
3. वाक्य-दोष
4. अर्थ-दोष
5. रस-दोष

शब्द-दोष

वाक्यार्थ की प्रतीति में सर्वप्रथम जो दोष उपस्थित होते हैं, उन्हें शब्द-दोष कहते हैं। वे सोलह हैं, उनका विवरण इस प्रकार है -

दुष्ट पदं श्रुतिकटु च्युतसंस्कृत्यप्रयुक्तमसमर्थम्।
निहतार्थमनुचितार्थं निरर्थकमवाचकं विधाऽश्लीलम्॥
सन्दिग्धमप्रतीतं ग्राम्यं नेयार्थमथ भवेत् क्लिष्टम्।
अविमृष्ट विधेयांशं विरुद्धमतिकृत् समासगतमेव॥

1. पदगत तथा समासगत

1. श्रुतिकटु
2. च्युतसंस्कार
3. अप्रयुक्त
4. असमर्थ
5. निहतार्थ
6. अनुचितार्थ
7. निरर्थक
8. अवाचक
9. तीन प्रकार के अश्लील
10. संदिग्ध
11. अप्रतीत
12. ग्राम्य
13. नेयार्थ

2. केवल समासगत

14. क्लिष्ट
15. अविमृष्ट विधेयांश
16. विरुद्धमतिकृत

इस सोलह दोषों में तेरह दोष पदगत तथा समासगत एवं तीन दोष केवल समासगत हैं।

वाक्य-दोष

वाक्य में रहने वाले बीस दोष निम्नलिखित हैं

प्रतिकूलवर्णमुपहतलुप्त विसर्ग विसन्धिहतवृत्तम्।
न्यूनाधिककथितपदं पतत्प्रकर्षं समाप्तपुनरात्तम्।
अर्थान्तरैकवाचकमभवन्मतयोगमनभिहितवाच्यम्।
अपदस्थपदसमासं संकीर्णं गर्भितं प्रसिद्धिहतम्।
भग्नप्रक्रममक्रममतपरार्थं च वाक्यमेव तथा।

वाक्य-दोष इक्कीस प्रकार के हैं

1. प्रतिकूलवर्णता
2. उपहत विसर्गता
3. विसन्धि
4. हतवृत्तता
5. न्यूनपदता
6. अधिकपदता
7. कथितपदता
8. पतत्प्रकर्षता
9. समाप्तपुनरात्तता,
10. अर्थान्तरैकवाचकता
11. अभवन्मतसम्बन्ध
12. अमतयोग
13. अनभिहितवाच्यता
14. अस्थानपदता
15. अस्थानसमासता
16. संकीर्णता
17. गर्भितता
18. प्रसिद्धिविरोध
19. भग्नप्रक्रमता
20. अक्रमता
21. अमतपरार्थता

अर्थ-दोष

जहाँ अर्थ की प्रतीति में बाधा हो, या अभीष्ट अर्थ की प्रतीति न हो सके, वहाँ अर्थ-दोष होता है, ये अर्थ-दोष तेईस होते हैं—

अर्थोऽपुष्टः कष्टो व्याहतपुनरुक्तदुष्क्रमग्राम्याः।
सन्दिग्धो निर्हेतुः प्रसिद्धि विद्याविरुद्धश्च।
अनवीकृतः सनियमानियम-विशेषाविशेषपरिवृत्ताः।
साकांक्षोऽपदयुक्तः सहचरभिन्नः प्रकाशितविरुद्धः।
विध्यनुवादायुक्तत्यक्तपुनः स्वीकृतोऽश्लीलः॥

तेईस प्रकार के अर्थ-दोष निम्नरूप हैं-

1. अपुष्ट अर्थ
2. कष्ट
3. व्याहत
4. पुनरुक्त
5. दुष्क्रम
6. ग्राम्य
7. संदिग्ध
8. निर्हेतु
9. प्रसिद्धिविरुद्ध
10. विद्याविरुद्ध
11. अनवीकृत
12. नियम में अनियम
13. अनियम में नियम
14. विशेष में अविशेष और
15. अविशेष में विशेष रूप
16. साकांक्षता
17. अपदयुक्ताता
18. सहचरभिन्नता
19. प्रकाशित विरुद्धता
20. विध्ययुक्तत्व
21. अनुवादायुक्तत्व
22. त्यक्तपुनः स्वीकृत
23. अश्लील

धन्यवाद: